किशनगढ़ की लघु चित्र शैली में मानवीय भावनाओं का उद्दीपन

1st हेमन्त धवल, 2nd डॉ. जगदीश प्रसाद मीणा,

हेमन्त धवल,
शोधार्थी, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविधालय, जयपुर
ई–मेल : hdhawal9@gmail.com

डॉ. जगदीश प्रसाद मीणा,
सहायक आचार्य, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविधालय, जयपुर

सारांश

कलाकार द्वारा रचित सभी रचनाओं का सम्बन्ध किसी न किसी प्रकार से मानवीय भावनाओं के उद्दीपन से रहा है। कलाकरों ने भिन्न–भिन्न कलाओं से विभिन्न माध्यमों का प्रयोग करते हुए भावों की अभिव्यक्ति करने का प्रयास किया है। कलाकारों ने संगीत, नाटक, चित्र व विभिन्न कलाओं के माध्यम से शोक, क्रोध, ग्लानी, विरक्ति, श्रृंगार व शौर्य आदि भावों को व्यक्त किया हैं। सौंदर्यशास्त्रियों ने चार प्रकार के अनुभाव बताये है सात्विक अनुभाव, आहार्य अनुभाव, वाचिक अनुभाव व आंगिक अनुभाव तथा दो प्रकार के उद्दीपन विषयगत उद्दीपन व बाह्य उद्दीपन बताये है। भाव के दो पक्ष मानसिक पक्ष व शारीरिक पक्ष बताये गए है।

किशनगढ़ चित्रकला में भावों का उद्दीपन पौराणिक कथाओं के चित्रण के माध्यम से किया गया है। किशनगढ़ चित्रकला में चित्रित चित्र प्रमुखतः कवित्त पर आधारित है। यहाँ के कलाकारों के चित्रण का प्रमुख गुण श्रृंगारिक रस का स्थायी भाव रहा है। यहाँ की कला में सर्वाधिक चित्रण श्रृंगारिकता तथा जनमानस की राधाकृष्ण सम्बन्धी लोक–माधुर्य कथाओं का हुआ है। किशनगढ़ चित्र शैली में कलाकारों ने चित्रकला में विभिन्न भावों को उत्पन्न करने हेतु पृष्ठभूमि, श्रृंगार, नेत्रों व राधा–कृष्ण जैसे माध्यमों का प्रयोग किया है। किशनगढ़ चित्रकला में कलाकारों ने वैराग्य, दंभ, जड़ता, मोह, संदेह व लज्जा जैसे भावों का चित्रण प्रमुखता से किया हैं।

मुख्य शब्द – मनोविकार, अभिव्यक्ति, भौतिकी, विभाव, आस्वादन, वस्त्राभूषण, लज्जा, वनकुंज, अभिसरण, श्रृंगारकालीन, उद्दीपन, अनुगमन, भावविहल, वैराग्य, विवेचन, धृति, स्वच्छन्द, अविहित्था, उग्रता, संवेदनशीलता।

शोध उद्देश्य

- किशनगढ़ चित्रकला में भावों के उद्दीपन की प्रक्रिया का अध्ययन करना।
- किशनगढ़ चित्रकला में निहित मनोवैज्ञानिक एवं सौंदर्यात्मक तत्वों का विश्लेषण करना।

- राधा–कृष्ण विषयक चित्रों में श्रृंगार रस की प्रधानता का विवेचन करना।
- विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के समन्वय से उत्पन्न रस निष्पत्ति का अध्ययन करना।
- राधा–कृष्ण, पृष्ठभूमि, नेत्र, श्रृंगार, वस्त्राभूषण आदि माध्यमों के भाव–अभिव्यंजना में योगदान को रेखांकित करना।
- किशनगढ़ चित्रकला को राजस्थान की अन्य लघु चित्रशैलियों से भाव–अभिव्यक्ति के दृष्टिकोण से अलग पहचान देना।
- नागरीदास और निहालचंद जैसे प्रमुख कलाकारों की कृतियों में निहित भावाभिव्यक्ति और रस–संवेदना का विश्लेषण करना।
- किशनगढ़ चित्रकला में भावों के उद्दीपन और आधुनिक मानव–मन की संवेदनाओं के मध्य साम्य स्थापित करना।
- किशनगढ़ चित्रकला में धार्मिकता, अध्यात्म और भक्ति तत्व के माध्यम से भावों की गहराई को उजागर करना।
- किशनगढ़ चित्रकला के माध्यम से भारतीय सौंदर्यशास्त्र में भाव और रस सिद्धांत की प्रासंगिकता को पुनःस्थापित करना।

शोध विधि

इस शोध कार्य में वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग किया गया है। किशनगढ़ चित्रकला के भावों, प्रतीकों और सौंदर्यात्मक तत्वों का गहन विश्लेषण किया गया है। शोध में प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत किशनगढ़ संग्रहालय, अजमेर संग्रहालय, निजी संग्राहकों के पास उपलब्ध मूल चित्रों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया। द्वितीयक स्रोतों के रूप में संबंधित ग्रंथ, शोध पत्र, शोध प्रबंध, ऐतिहासिक अभिलेख, कला समीक्षाएँ, पत्रिकाएँ तथा लेखों का अध्ययन किया गया।

शोध में भारतीय सौंदर्यशास्त्र के मूल सिद्धांतों, विशेषतः भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में वर्णित रस, विभाव, अनुभाव एवं संचारी भाव, को आधार मानकर किशनगढ़ चित्रकला के भाव–चित्रण का तुलनात्मक विवेचन किया गया है। विश्लेषण की प्रक्रिया में विषय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, धार्मिकता, भक्ति भावना, तथा श्रृंगारिक अभिव्यक्ति के सौंदर्यात्मक पक्षों को सम्मिलित किया गया है। चित्रों की संरचना, रचना तत्व, रंग योजना, पृष्ठभूमि, एवं प्रतीकात्मक संकेतों का गहन अध्ययन कर यह निर्धारित किया गया है कि कलाकारों ने भावों के उद्दीपन हेतु किन कलात्मक साधनों का प्रयोग किया।

इससे यह स्पष्ट किया गया है कि किशनगढ़ चित्रकला भारतीय कलात्मक परंपरा की उस विशिष्ट धारा का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें भाव, रस और अध्यात्म का अद्वितीय संगम विद्यमान है।

साहित्यावलोकन

डॉ. अविनाश पारिक ने अपनी पुस्तक ''किशनगढ़ राज्य का इतिहास'' में किशनगढ़ राज्य के कलात्मक, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विषयों पर प्रस्तुतीकरण दिया है। डॉ. अभिलाषा गोयल ने अपनी पुस्तक ''किशनगढ़ की चित्रकला एक विवेचनात्मक अध्ययन'' में किशनगढ़ की चित्रकला व चित्रकारों पर अध्ययन प्रस्तुत किया है। किशनगढ़ की लघु चित्रकला के विभिन्न विषयों व उनकी तकनीक पर विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इन सभी पुस्तकों तथा महत्वपूर्ण लेखो की जानकारी इस शोध में उपयोगी रही। राजस्थान की कला परंपराओं और किशनगढ़ चित्रशैली को समझने में पूर्ववर्ती साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डॉ. वासुदेव अग्रवाल की कला संस्कृति में राजस्थान की कलात्मक चेतना और सांस्कृतिक धरातल का विश्लेषण किया गया है, जिससे किशनगढ़ कला की सामाजिक पृष्ठभूमि स्पष्ट होती है। डॉ. रीता प्रताप की भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास भारतीय कलाओं के विकासक्रम को रेखांकित करती है, जिससे किशनगढ़ शैली की विशिष्टता की पहचान संभव होती है। डॉ. जयसिंह नीरज की राजस्थानी चित्रकला और हिन्दी कृष्ण काव्य कृष्णकाव्य और चित्रकला के भावात्मक संबंध को प्रस्तुत करती है, जो राधा–कृष्ण विषयक चित्रों की काव्य प्रेरणा समझने में सहायक है। वहीं, डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला के अध्ययन ने किशनगढ़ शैली की तकनीकी, रूपात्मक और सौंदर्यगत विशेषताओं का गहन विवेचन किया है।

सैद्धान्तिक स्तर पर डॉ. ममता चतुर्वेदी की सौन्दर्यशास्त्र और डॉ. नमेन्द्र की रस सिद्धान्त ने भारतीय कला–दर्शन के भाव, रस और विभाव–अनुभाव के सिद्धांतों को स्पष्ट किया है, जो इस शोध का आधार बने हैं। इसके साथ ही डॉ. पुष्पलता पाण्डेय की रीतिकालीन श्रृंगारिक सतसइयों का तुलनात्मक अध्ययन ने काव्य और चित्रकला के श्रृंगारिक भाव–संबंधों को तुलनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया है। इन सभी स्रोतों से यह निष्कर्ष निकलता है कि किशनगढ़ चित्रकला केवल सौंदर्य या भक्ति की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि भारतीय भाव–संवेदना की एक गहन मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। पूर्ववर्ती अध्ययनों ने जहाँ इसकी ऐतिहासिक और शैलीगत विशेषताओं को उद्घाटित किया है, वहीं यह शोध उनके भावोद्दीपन और रस निष्पत्ति के कलात्मक तंत्र को नई दृष्टि से व्याख्यायित करता है।

प्रस्तावना

कला मनुष्य को आनन्द प्रदान करती है। कलाकार अपनी कृति से दर्शको के मन को मोह लेता है और उन्हें कलात्मक सौन्दर्य का दर्शन कराता है। जिस प्रकार जीवन के सौन्दर्य पक्ष को कलाकार अपनी कला के माध्यम से दर्शक के सामने प्रस्तुत करता है उसी प्रकार दर्शक भी कलात्मक सौन्दर्य को अनभूत करता है तथा कलाकार की कृति को खरीदता है।

मनुष्य जीवन के आरम्भ से ही अपने विचारों तथा भावों को दुसरे तक पहुँचाना चाहता है एवं दुसरे के विचारों को जानने हेतु उत्सुक रहता हैं। मनुष्य जो भी अपनी कल्पना या समझ से ग्रहण करता है उन्हें भौतिकी जगत में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।[1] मनुष्य के प्रस्तुतीकरण का तरीका

चित्रों या प्रतीकात्मक संकेत के स्वरूप में होता है। प्रेम, दया, करुणा, द्वेष आदि मनोविकार को प्रकट करने में मनुष्य को आनद प्राप्त होता है। आदिम बर्बर जनजातियों ने भीं अपनी कल्पनाओं, आकांक्षाओं तथा भावनाओं को प्रकट करने का प्रयास किया हैं। उन्होंने माध्यम के रूप में संगीत, नृत्य, चित्र आदि को प्रयोग किया हैं। चित्रकला के माध्यम से भावो की अभिव्यक्ति बहुत प्राचीन रही है। आदिम मनुष्य ने अपनी मूक भावनाओं को गुफाओं और चट्टानों की भित्तियों पर पत्थर व लकड़ी की तुलिकाओं से टेढ़ी.मेढ़ी रेखाओं द्वारा अंकित किया है।[2] संगीत, नृत्य व काव्य के समान ही चित्रकला में भी भावों की अभिव्यक्ति उत्कृष्ट स्वरूप में हुई हैं।

बौद्धकालीन शासकों के काल में कार्य करने वाले कलाकारों ने प्रतिमा, चैत्य, देवालय, स्तूप, प्रासाद आदि के रूप में ऐसी कला का निर्माण किया है जो आज भी दर्शकों को मोहित करती है। अजंता की गुफाओं में कलाकारों द्वारा किया गया कार्य आज भी कला विद्वानों व इतिहासकारों को प्रभावित करता है। इस काल में कलाकारों ने भावनाओं का रेखा व रंगों के माध्यम से बखूबी चित्रण किया हैं। कुछ रेखाओं के द्वारा ही मानवीय भावों को स्पष्ट कर देना यह कला की खूबी रही हैं। आगे चलकर बोद्धकला ने भारत की अन्य कई कलाओं को प्रेरित किया। मध्ययुग में विकसित होने वाली कला में श्रृंगार रस की प्रधानता अधिक देखने को मिलती है। श्रृंगार रस का स्थायी व संचारी भाव कलाकारों को अधिक प्रिय रहा है। मध्यकालीन चित्रकला पूरी तरह से भाव तथा रस पर आधारित है। प्रमुखतः इस समय तक नव युगलों की प्रेम कथा साहित्य का हिस्सा बन चुकी थी जिसका स्पष्ट प्रभाव चित्रकला में देखने को मिलता है।

राजस्थान की विभिन शैलियों में श्रृंगार भाव प्रमुखता से उजागर हुआ है। कलाकारों ने अपने संरक्षक शासकों की कल्पना को चित्रित करते हुए श्रृंगार विषयक कृतियों को अधिक चित्रित किया हैं। विभाव को दो भाग में विभक्त किया गया है पहला आलम्बन विभाव तथा दूसरा उद्दीपन विभाव।[3] जिस वस्तु के सहारे रस की उत्पत्ति हो उसे आलम्बन विभाव कहते है। राजस्थान की विभिन्न शैलियों में काव्य के आधार पर आलम्बन विभाव दो स्वरूपों यथा स्वच्छंद स्वरूप और नायक.नायिका के स्वरूप में अभिव्यंजित होता है। नायक–नायिका सम्बन्धी भेद की यह धारा काम अथवा श्रृंगार सम्बन्धी मनोविज्ञान से अनुप्रमाणित होकर तथा नाट्यशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुरूप अपने शुद्ध शास्त्रीय रूप में प्रचलित हुई थी। विद्वानों के मतानुसार 16वीं शताब्दी के आरंभ में कृष्ण सम्बन्धी चित्रों का चित्रण अधिक हुआ। विशेषतः नायक–नायिका के रूप में कृष्ण, राधा व गोपियों का चित्रण किया गया है, अतः विभाव पक्ष का एक अंग नायक–नायिका भेद किशनगढ़, बूंदी, कोटा आदि शैलियों का प्रमुख विषय बन गया। भाव चित्रण आस्वादन की प्रक्रिया के बिना रस की अनुभूति नहीं की जा सकती है। यहीं कारण है कि भारतीय कला में भाव तथा रस चित्रण को अलग–अलग मान्यता दी गयी है।

किशनगढ़ चित्रकला का परिचय

किशनगढ़ शैली अपनी धार्मिकता के कारण प्रसिद्ध हुई तथा इसके मूल में कई पीढियों से धार्मिकता रही हैं। यहाँ की कला को प्रकाश में लाने का श्रेय पूर्ण रूप से डॉ. फैयाज अली व विद्वान् एरिक डिंकिन्सन को जाता है।

महाराजा किशनसिंह जी के द्वारा 1609 ई. में किशनगढ़ राज्य की स्थापना के उपरान्त लगभग 1658 से 1706 ई. के मध्य साहित्य व कला के क्षेत्र में रचनाएँ होना आरंभ हो गयीं। प्रारम्भ में सहसमल, भारमल व हरिसिंह आदि राजाओं के समय में कला व साहित्य के क्षेत्र में इतना विकास नहीं हो सका क्योंकि युद्ध सम्बन्धी समस्याओं से वे घिरे हुए थें। 1658 से 1706 ई. के मध्य राजा मानसिंह व राजा रूपसिंह जैसे कलानुरागी शासक के काल में उल्लेखनीय कार्य किशनगढ़ की कला में होना शुरू हुआ।[4] किशनगढ़ राज्य के पाँचवे राजा के समय युद्ध सम्बन्धी समस्याओं के चलते रूपनगढ़ को नयी राजधानी बनाया गया जो कि सावंत सिंह के समय तक रही। रूपसिंह विधा प्रेमी व भक्त हृदय राजा थे। भवानीदास, डालचन्द व कल्याणदास इनके समय के ही चित्रकार थे। इन्होने राधा–माधव की लीलाओं को चित्रों के माध्यम से उकेरने का कार्य शुरू किया। डॉ. फैयाज अली खां ने अपने शोध में इस बात को स्पष्ट किया है कि कल्याण राय जी की मूर्ति व महाप्रभु वल्लभाचार्य के दोनों चित्र प्रतीकों के रूप में है, जिन्होंने किशनगढ़ शैली को कला का विषय प्रदान किया। इन दो प्रतिरूपों के आधार पर ही किशनगढ़ चित्र शैली में राधा–कृष्ण की लीलाओं को चित्रित किया गया हैं। मानसिंह 1658 ई. में गद्दी पर बैठे, वे स्वयं कवि और कला मर्मज्ञ शासक थे। वैष्णव भक्त होने के कारण इनकी भक्ति सम्बन्धी विषयों में अत्यधिक रूचि थीं। वर्तमान में इनके बनाये कुछ चित्र कपड़ा भण्डार में मिल जाते हैं। किशनगढ़ चित्रकला के विकास में मानसिंह के पुत्र राजसिंह का विशेष योगदान है। यह स्वयं कला रसिक एवं चित्रकार थे। इनके द्वारा 33 ग्रंथों की रचना की गयी जिनका प्रभाव अन्य कलाकारों की कला पर दृष्टिगोचर होता है। इन्होने अपनी चित्रशाला में चित्रकार सूरध्वज को मुख्य प्रबंधक के रूप में नियुक्त किया।

महाराजा सावंतसिंह किशनगढ़ दरबार के अत्यंत उच्च कोटि के विभूति हो गये। नागरीदास के नाम से ये अपनी कविताओ की रचना करते थे। इनके द्वारा रचित पदों, कवित्तों एवं सवैयो आदि पर बनाये गए चित्रों ने किशनगढ़ शैली पर चार चाँद लगा दिए। इन्ही की प्रेरणा से किशनगढ़ राज्य साहित्य, चित्रकला, संगीतकला व संस्कृत भाषा में ठोस व सशक्त बना। इन्ही के समय में सूरध्वज निहालचन्द ने 1735 से 1757 ई. तक इनकी काव्य रचनाओं पर कार्य किया।[5] 1778 ई. में इन्होने विश्व प्रसिद्ध कृति राधा (बणी–ठणी) बनाया था। इस चित्र को बनाकर निहालचन्द ने किशनगढ़ नगर को सम्पूर्ण विश्व में पहचान दिलवायी। नागरीदास के भाई बहादुरसिंह के राज्य में चित्रकार नानकराम ने अनेक चित्र बनाये। किशनगढ़ चित्र शैली में निहालचंद, अमरचन्द व निहालचन्द के पोत्र सीताराम का नाम आता है जो इस शैली के स्तम्भ माने जाते हैं।

किशनगढ़ चित्रकला कला के क्षेत्र में विश्व स्तर पर एक अलग ही पहचान रखती है। किशनगढ़ चित्र शैली के कलाकारों ने सौंदर्य के नवीन स्वरूपों को चित्रित किया। राधा–कृष्ण, नागर समुच्चयन, बारहमासा, गीत–गोविन्द, भागवत पुराण, वैभव विलास व राग–रागनियाँ आदि विषयों पर सुंदर चित्रण किया हैं।[6] विश्व प्रसिद्ध चित्र बणी–ठणी ने किशनगढ़ के कला सौन्दर्य को विश्व स्तर की कलाओ में प्रतिष्ठित किया है। अमीरचंद, धन्ना, भंवरलाल, छोटू, सुरध्वज, मोरध्वज निहालचन्द व नानकराम आदि किशनगढ़ शैली के चित्रकारों ने कला को निरंतर विकास के पथ की तरफ अग्रसर किया हैं।[7]

मानवीय भावनाओं का परिचय

मानव मन में कई प्रकार के विचार व भाव जन्म लेते है और विलीन हो जाते हैं। कुछ भाव नित्य स्थित रहते है जिन्हें स्थायी भाव कहा जाता है। साहित्य शास्त्रियों ने रति, शोक, भय, उत्साह, क्रोध, जुगुप्सा, हास, विस्मय, निर्वेद आदि भावों को प्रमुख रूप से माना हैं।[8] यदि मनोवैज्ञानिकों की भाषा में भावों को परिभाषित करे तो इस प्रकार से अर्थ होगा कि किसी वासना के चारों और केन्द्रित रहने वाला मनोविकार भाव कहा गया है।[9] भाव के दो पक्ष माने गए है – शारीरिक तथा मानसिक। मानसिक पक्ष अन्तः चेतना व अनुभूति से सम्बंधित है तो शारीरिक पक्ष बाह्य अभिव्यक्ति से सम्बंधित है। ठीक इसी प्रकार मनोवेग के भी तीन स्तर बताये गए, जो निम्न है –

1. उत्तेजित करने वाले कारण
2. मानसिक प्रभाव
3. शारीरिक प्रभाव

भारतीय काव्य शास्त्र में इन्ही मनोवेग के तीन स्तर को क्रमशः विभाव, स्थायीभाव तथा अनुभाव कहा गया हैं। चित्र में काव्य से अधिक संवेदनशीलता होती है क्योंकि चित्र में नेत्रों के माध्यम से दृश्य की अनुभूति स्पष्ट व सीधा प्रभाव डालती है। विभाव तथा अनुभाव के विलुप्त होने पर स्थायी भाव रस की स्थिति को प्राप्त नहीं हो सकता है। भरतमुनि के अनुसार –

"विभावानुभावा व्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः।"[10]

अर्थात् विभाव, अनुभाव तथा व्याभिचारी भावों के संवेग से ही स्थायी भाव रस दशा को प्राप्त होते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि विभाव, अनुभाव, और संचारी भावों से पुष्ट होकर ही स्थायी भाव रस अवस्था को प्राप्त होते हैं। रस को ही स्थायी भाव माना गया है।

श्रृंगारकालीन किशनगढ़ शैली में तत्कालीन सामन्ती वर्ग की श्रृंगारिकता तथा जनमानस की राधा–कृष्ण सम्बन्धी लोकमाधुर्य भावना का जितना विस्तृत चित्रण हुआ है उतना किसी अन्य भाव का नहीं हुआ। यहाँ की चित्रकला रसप्रधान है और उसे अधिक संयत, शास्त्रीय एवं भावमय बनाने का श्रेय काव्य को है। काव्यात्मक भावनाओं का मनोवैज्ञानिक चित्रांकन इसमें विशेष रूप से हुआ हैं। वह वस्तु

जो रस को जाग्रत करने में सहयोग करती है तथा उनकी आस्वादन योग्यता को बढ़ाती है उन्हें उद्दीपन विभाव कहते है। इसके उदहारण है श्रृंगार के सखा–सखी, वन–उपवन, चन्द्र–चाँदनी, नदी–तट आदि। उद्दीपन के भी दो भेद किये गए जो कि निम्न है –

1. विषयगत उद्दीपन
2. बाह्य उद्दीपन

विषयगत उद्दीपन – नायक–नायिकाओं के वस्त्राभूषण श्रृंगार, सखा–सखी आदि आते हैं। नायिकाओं के गुण तथा भाव का चित्रण रति क्रिया में प्रमुखता से किया गया है।[11] चित्रकला में उद्दीपन विभाव के भावों की अभिव्यक्ति के लिए एक प्रमुख भूमिका निभाता है। काव्य में कवि सौंदर्य के अधिकतर बाह्य तत्वों का प्रयोग करता है। कलाकार पृष्ठभूमि के चित्रण हेतु प्राकृतिक तत्वों का चित्रण करता है।

रति, शोक, हास्य और स्थायी भाव को व्यक्त करने वाली आश्रित चेष्टायें अनुभाव कहलाती हैं। ये चेष्टायें भाव जागृति के उपरांत आश्रय में उत्पन्न होती है इसलिए इन्हें अनुभाव कहा जाता है। अनुभाव का अर्थ है जो भावों का अनुगमन करें। अनुभाव के चार भेद किये गए है जो निम्न प्रकार से है–

1. **सात्विक अनुभाव** – स्थायी भाव के जागृत होने पर स्वाभाविक अकृत्रिम, अंगविकार को सात्विक अनुभाव कहा जाता है।
2. **आंगिक अनुभाव** – शरीर सम्बन्धी चेष्टायें आंगिक अथवा कायिक अनुभाव कहलाती है।
3. **आहार्य अनुभाव** – आरोपित या कृत्रिम वेष रचना को आहार्य अनुभाव कहते हैं।
4. **वाचिक अनुभाव** – प्रयत्नपूर्ण किये गए वाक् व्यापार को वाचिक अनुभाव कहते हैं।[12]

कई रीतिकालीन कवियों ने अनुभाव की स्पष्ट और मुखर रेखाओं के द्वारा बिम्ब बनाकर रस व्यंजना की है। किशनगढ़ की लघु चित्रकला में अनुभूति की अनुकृति से भाव अभिव्यक्तिकरण की सजीव प्रक्रिया आदि से अंत तक दृष्टिगोचर होती है। रस निष्पत्ति का विवेचन आचार्य भरतमुनि ने अपने नाटक में विशुद्ध विवेचन करते हुए प्रस्तुत किया है। उसका पूर्ण समागम किशनगढ़ की चित्रकला में देखने को मिलता है। किशनगढ़ के चित्रों में अधिकतर चित्रों में नायक–नायिका के माध्यम से ही रस की निष्पत्ति हुयी है। साहित्य के आधार पर भी राधा–कृष्ण के रागात्मक सम्बन्ध का विवेचन हुआ है।

किशनगढ़ शैली के चित्रों में चित्रित भाव

सौन्दर्यशास्त्र में भरत ने संचारी भावों की संख्या 33 बतायी हैं। हिंदी व संस्कृत के काव्यशास्त्रियों ने भी संचारी भावों की संख्या 33 बतायी, जो इस प्रकार से है ग्लानी, शंका, असूया, श्रम, आलस्य, दैन्य, चिन्ता, मोह, स्मृति, धृत्ति, चपलता, हर्ष, आवेग, विषाद, औत्सुक्य, निद्रा, अपस्मार,

सुप्ति, विवोध, अमर्ष, अविहित्था, उग्रता, मति, व्याधि, उन्माद, मरण, त्रास और वितर्क। किशनगढ़ चित्र शैली के चित्रों में कलात्मक अभिव्यंजना तथा कलात्मक सृजन दोनों ही समान भाव संयोजक सत्व हैं। किशनगढ़ चित्र शैली में प्रमुखतः भावो की अभिव्यक्ति हुयी जो इस प्रकार से है–

वैराग्य का भाव – जब किसी विशेष कारण से मन में विरक्ति का भाव उत्पन्न होता है तो उसे वैराग्य का भाव कहते है। वैराग्य का एक अर्थ निर्वेद भी है जिसे परवर्ती आचार्यों ने आठ स्थायी भावों से पृथक नवा स्थायी भाव माना है। ''नागरीदास की उपासना'' चित्र में सावंत सिंह पूजा स्थल पर बैठे हुये है जो सांसारिक माया–मोह के प्रति वैराग्य के भाव को प्रदर्शित कर रहा है।

संदेह का भाव – मनुष्य द्वारा किये गए अपराध के कारण कुछ अनिष्ठ होने का भय उत्पन्न हो तो वहा संदेह का भाव जागृत होता हैं। चित्र ''वनकुंज में राधा–कृष्ण'' में राधा–कृष्ण संसार की भौतिकता से छिपकर वनकुंजो के मध्य कुछ समय बिता रहे है तो वही कुछ दुरी पर खड़ी दो स्त्रियाँ इस दृश्य को देख रही है। इस दृश्य को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि ये नायिका का अभिसरण अपराध है जिसमें लोगो के अपवाद की शंका उत्पन्न हो गयी है।

दंभ का भाव – नायिका का मन अपने कुल ऐश्वर्य यौवन आदि से जब गर्वित हो जाता है तो ऐसी परिस्थिति में दंभ की परीस्थिति उत्पन्न होती है। ''बालकनी में बैठी हुई राधा'' चित्र में राधा का चित्रण नायिका के रूप में हुआ जिसमें उसके रूप यौवन, प्रभुता आदि के दंभ या मद की झलक मिलती है।

जड़ता का भाव – जब प्रेमी एक दुसरे को देखते ही अपनी सुधबुध भूल जाते है तो उनकी यह विस्मृतता के भाव की अवस्था जड़ता कहलाती है। ''राधा–कृष्ण बालकनी में'' चित्र में प्रेमी युगल के चित्रण को देखने पर जड़ता का भाव स्पष्ट नजर आता है।

मोह का भाव – चित्र में विकलता का भाव उत्पन्न होता है जिसका प्रमुख कारण भयए विषादए विरह आदि हैंए इन सभी के कारण उत्पन्न इस स्थिति को मोह कहा जाता है। इस भाव की अभिव्यक्ति कर्तव्य, अकर्तव्य, विवेक व अविवेक आदि रूपों में की जाती है। किशनगढ़ के चित्रों में राजसिक वैभव के मध्य राधा–कृष्ण के स्वरूपों का अंकन मिलता है। ''राधा–कृष्ण बालकनी में'' चित्र में मोह का भाव उत्पन्न हो रहा है।

लज्जा का भाव – जब प्रेमिका अपने प्रेमी को देखती है तो नायिका के हृदय में चित्रकार ने लज्जा का भाव प्रकट किया है। ''कृष्ण राधा को पुष्प देते हुए'' चित्र में नायिका के मुख पर लज्जा का भाव उत्पन्न हो रहा है।

किशनगढ़ चित्रकला में भावों को व्यक्त करने के माध्यम

चित्रकला में अपनी कला को रूपांतरित करने से पूर्व यह आवश्यक होता है कि कलाकार किन–किन तत्वों के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्त करे। चित्रकार अपने चित्रण के अंतर्गत

नायक–नायिका, प्राकृतिक दृश्य, वस्त्राभूषण आदि माध्यमों का सहारा लेकर भावों की अभिव्यक्ति करता है। कवि कविताओं में, चित्रकार चित्रों में, शिल्पकार शिल्पों में अपने लक्ष्य को कृतियों के माध्यम से प्राप्त करता है। चित्र में दिए भावों को व्यक्त करने हेतु रंग तथा रेखायें अपने गुणों के कारण रसात्मक प्रभाव डालती हैं। किशनगढ़ की लघु चित्रकला में कलाकारों ने विभिन्न माध्यमों का प्रयोग करते हुए भावनाओं को अभिव्यक्त किया हैं।[13]

राधा–कृष्ण के माध्यम से भावों का चित्रण – किशनगढ़ चित्रकला में राधा–कृष्ण के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति बड़ी कुशलता से की हैं। जहाँ एक तरफ कवियों ने गीत–गोविन्द, बिहारी–सतसई तथा नागरसमुच्चय आदि ग्रंथो के आधार पर भावों को अभिव्यक्त की है, वही चित्रकारों ने इन्ही ग्रंथो के आधार पर चित्रों के चित्रण किये थें। ''चांदनी रात में संगीत सभा'', ''बणी–ठणी'' व ''वनकुंज में राधा–कृष्ण'' जैसे चित्रों में राधा–कृष्ण के प्रेम युगल के स्वरूपों का चित्रण सरल एवं ग्राह्य बना दिया हैं। कलाकारों ने राधा–कृष्ण के चित्रांकन में उस समय के सामन्ती प्रभाव को भी व्यक्त किया हैं।

नेत्रों के माध्यम से भावों का चित्रण – नेत्रों के माध्यम से भावों का चित्रण भी किशनगढ़ के कलाकारों ने बखूबी किया हैं। अतः ये कहना उचित होगा की उद्दीप्त करने वाली प्रत्येक वस्तुओं का अंकन कलाकार द्वारा करना उसकी निजी विशेषता है। ''सिंहासनारुढ़ राधा–कृष्ण'' चित्र में राधा के नेत्र लज्जा से झुके हुए है तथा कृष्ण भावविहल होकर राधा को निहार रहे है। इसी प्रकार कलाकारों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति जो चित्रण के माध्यम से की है, उन्हें शब्दों की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती हैं। हिंदी व संस्कृत साहित्य के प्रेम कविताओं के रूप में नेत्र की व्याख्या की गयी है ठीक वैसे ही चित्रित नेत्र किसी पदमाक्षी या कमलनयनी से कम नहीं हैं।

श्रृंगार के माध्यम से भावों का चित्रण – किशनगढ़ चित्र शैली में जितना अधिक चित्रण उस समय के जनमानस तथा श्रृंगारिकता की राधा–कृष्णा सम्बन्धी लोकमाधुर्य भावनाओं का हुआ उतना अन्य भावों का नहीं हुआ।[14] किशनगढ़ की चित्रकला रस प्रधान है तथा इस कला को श्रेष्ट बनाने में प्रमुख कार्य काव्य कला ने किया है। किशनगढ़ के राजदरबार में जहाँ एक तरफ दरबारी शानो–शौकत तथा एश्वर्य का चित्रण हुआ है वही दूसरी तरफ श्रृंगार भावना की भी व्याख्या हुई है।

किशनगढ़ चित्र शैली में मोतियों का भव्य चित्रण उसकी निजी पहचान है जो सभी शैलियों के रासलीला चित्रण में दखने को मिलती है लेकिन ऐसी सौम्यता उन शैलियों में नहीं। किशनगढ़ की लघु चित्रकला में राधाकृष्ण की श्रृंगारिक भावना का चित्रण परिपेक्ष्य की विभिन्न स्थितियों में मिलता है जैसे जल– क्रीड़ा, हिंडोल– क्रीड़ा, वन–विहार, लीला–विलास, बसंत–विलास तथा होली आदि।[15] ''झील में कमल चुनते श्री कृष्ण'' चित्र में प्रयुक्त रंग योजना व सम्पूर्ण वातावरण सभी श्रृंगारिक भावना की रसानुभूति कराता है।

पृष्ठभूमि के माध्यम से भावों का चित्रण – चित्रकार भावों को उदीप्त करने के लिए पृष्ठभूमि का चित्रण करता है। किशनगढ़ के कलाकारों ने भावों के उद्‌गार हेतु पृष्ठभूमि का बखूबी चित्रण

किया है। किशनगढ़ एवं रूपनगढ़ का परिवेश जिस प्रकार झीलों, पहाडों, उपवनों से घिरा हैं उसी रूप में प्रकृति का चित्रण भी आकर्षक व लालित्य पूर्ण है।[16] किशनगढ़ शैली के चित्रों में जितना महीन एवं रंगीन चित्रण देखने को मिलता है उतना अन्यत्र किसी शैली में देखने को नहीं मिलता है। चित्रों में बतख, हंस, सारस आदि का चित्रण झीलों के मध्य क्रीड़ा करते हुए किया गया हैं। झीलों में तैरती लाल की रंग नौकाये जो कि एकमात्र किशनगढ़ शैली में ही चित्रित हुई हैं।

परिपेक्ष्य में चित्रित विभिन्न वस्तुओं ने राधा–कृष्ण की प्रेम भावना को उदीप्त करने में सहायक पक्ष की भूमिका का संचालन किया है। इसी दृष्टि से यदि किशनगढ़ के सभी चित्रों को देखा जाये तो वह प्रकृति के सानिध्य का प्रतिफलन है, जिसमें कलाकार ने स्वयं की भक्ति परक दृष्टि से प्रकृति का चित्रण किया है। इनके चित्रण से प्रकृति स्वयं अध्यात्मिक हो चुकी है।[17] चित्र में वनों के मध्य बनी सफेद रंग की मुंडेरे, पुष्प दल के आवरण में जलाशय, राजभवन, फव्वारे, आम, केले आदि के वृक्षों से घिरे विभिन्न दृश्य चित्र–विषय से जोड़ने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार चित्रकारों ने पृष्ठभूमि का अंकन भावो के उद्दीपन के लिए सहायक रूप में किया है।

''राधा–कृष्ण का प्रणय भाव'' चित्र में राधा–कृष्ण के सानिध्य को खुले आकाश के नीचे चित्रित किया गया है। चित्र में देखने पर ऐसा प्रतीत होता है की मानो हर तरह से प्रकृति निहार–निहार कर राधा–कृष्ण की प्रणय लीला को सात्विकता प्रदान कर रही है। आस–पास में चित्रित संगीत की मधुर ध्वनी का अहसास कराती हुई राधा की सखियाँ हाथों में वाद–यन्त्र लिए हुए, पक्षियों का कलरव, प्रकृ ति की हरियाली से वातावरण भाव–पूर्ण बनता है जो देखते ही बनता है। इस चित्र में चित्र धरातल का बहुत ही सुन्दर ढंग से चित्रण किया गया हैं। इसके अलावा एक और चित्रित चित्र ''नौका–विहार, में चित्रकार ने राधा–कृष्ण के साथ प्रकृति की अनंत गहराई को दर्शाने का प्रयास किया है। इस विशाल चित्र को पूरा करने हेतु चित्रकार ने उन्हीं तत्वों का अंकन किया है जो अध्यात्म, भक्ति और प्रेम के प्रतीक है।

किशनगढ़ चित्र शैली के प्रमुख चित्रों में भावों की अभिव्यक्ति

नौका विहार – निम्नांकित चित्र को चित्रकार ने भागों में विभक्त किया हुआ है। चित्र के अग्रभाग में राधा–कृष्ण को वनकुंज में एक वृक्ष के नीचे खड़े चित्रित किया हुआ हैं। राधा–कृष्ण दोनों एक दुसरे को निहार रहे है। सम्पूर्ण संसार की भौतिकता से परे एकांत में। कलाकार ने प्रेम रूपी भाव का सुन्दर समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है। वही चित्र के पृष्ठ भाग में राधा–कृष्ण को कुछ दासियों के साथ लाल रंग की नौका पर बिठाये हुए चित्रित किया गया हैं। साँझ का समय है और आसमान में हल्की–हल्की लालिमा छायी हुई है। सम्पूर्ण चित्र में राधा–कृष्ण के

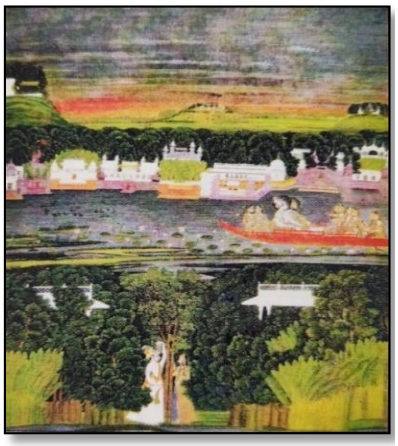

चित्र संख्या 01 : नौका विहार

प्रेम स्वरूप की श्रृंगारिकता दर्शाने हेतु परिप्रेक्ष्य की वस्तुओं का सुन्दर प्रयोग किया हैं।

एकांत में प्रणय – प्रस्तुत चित्र में राधा-कृष्ण दोनों युगल एकांत में अपने सांसारिकता से दूर प्रेम के सुनहरे पल व्यतीत कर रहे हैं। कृष्ण राधा के मुख को व राधा कृष्ण के मुख को स्नेहपूर्वक हाथो से स्पर्श कर रही है। कृष्ण राधा के मोह में पूर्ण रूप से विलीन होकर राधा को निरंतर निहार रहे है। ऐसी स्थति में मोह के भाव की अभिव्यक्ति हो रही है। वही कृष्ण को देखकर राधा लज्जा वश अपना मुख कुछ नीचे झुखाये हुए बैठी है तथा कृष्ण के प्रेम को महसूस कर रही है। ऐसी स्थिति में लज्जा व प्रेम का भाव उत्पन्न हो रहा है। चित्र में राधा कृष्ण के एक तरफ एक घोड़ा खड़ा है तथा दूसरी तरफ श्वेत वर्ण का भवन निर्मित्त है। सम्पूर्ण दृश्य में एकान्तता व शांति का भाव दर्शाया गया है तथा चित्र के मध्य में राधा–कृष्ण का प्रणय भाव दृशाया गया है।

चित्र संख्या 02 : एकांत में प्रणय

राजा सावंत सिंह की पूजा – इस चित्र में राजा सावंतसिंह व उनकी प्रेयसी बणी–ठणी को साधुओं के वस्त्र धारण किये चित्रित किया गया हैं। चित्र में राजा सावंतसिंह को कृष्ण के समान नील वर्ण में चित्रित किया है। दोनों ने सांसारिक मोह–माया को त्याग दिया है तथा प्रभु की भक्ति में तल्लीन हैं। इस चित्र में भक्ति रस की प्रधानता दर्शायी गयी है। राजा सावंतसिंह प्रभु की भक्ति में लीन है तथा उनसे कुछ ही दूरी पर बणी–ठणी अपने घूँघट को हाथो से थामे हुए खड़ी है तथा सावंतसिंह को निहार रही है। सम्पूर्ण दृश्य महल के भीतर का है। चित्र में एक पानी का फव्वारा बना हुआ है। सम्पूर्ण दृश्य में कलाकार ने भक्ति रस के भाव को उत्पन करने का प्रयास किया है।

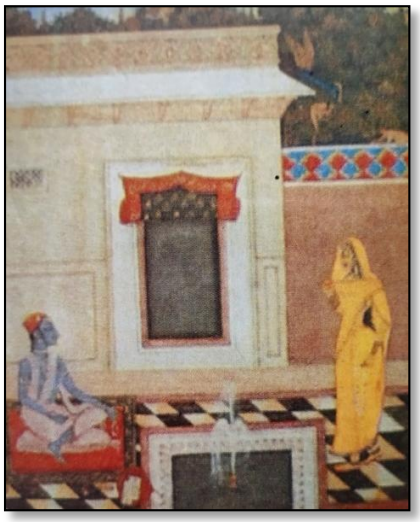

चित्र संख्या 03 : राजा सावंत सिंह की पूजा

निष्कर्ष

मनुष्य के स्वभाव में सदा ही एक प्रवृत्ति सम्मिलित रही है कि वह अपने भावों को दुसरे तक पहुँचाता है व दुसरे के भावों को जानने व समझने हेतु उत्सुक रहता है। मनुष्य जो कुछ सोचता, समझता व कल्पना करता है उसे ही चित्रों के माध्यम से उबारने का प्रयास करता हैं। सच्चा कलाकार वही माना जाता है जो अपने लक्ष्य को अपनी रचनाओं के माध्यम से प्राप्त करता है, चाहे वह मूर्तिकार हो, कलाकार हो या कवि हो। चित्र में कलाकार द्वारा प्रयुक्त माध्यम, रंग व तकनीक विभिन्न गुणों के

कारण कई प्रकार के रसात्मक प्रभाव डालते हैं। कलाकार द्वारा अपने मन के भीतर उत्पन्न कल्पना को साकार रूप देने के लिए चित्र योजनाओं से कार्य करता है। जैसे काव्य में भाव तथा रस का अलग.अलग स्थान होता है वैसे ही चित्रकला में भाव की प्रधानता तथा रस का अलग–अलग स्थान है। कलाकार ऐसी वस्तुओं का चित्रण करता है जो मन में उत्पन्न भावों को जागृत करने में सक्षम होती है।

किशनगढ़ चित्रकला में बहुत से चित्र कविताओं पर आधारित है। चित्रों में दृश्य की प्रत्यक्ष अनुभूति नेत्र के माध्यम से सीधा प्रभाव व्यक्त करती है। जिस तरह के वातावरण में मनुष्य रहता है उसी प्रकार के वातावरण के भावों की उत्पत्ति उसके मन में होती हैं। किशनगढ़ के कलाकारों का प्रिय विषय श्रृंगार रस का स्थायी भाव रहा है। श्रृंगारिता तथा जनमानस की राधा–कृष्ण सम्बन्धी लोक. माधुर्य भावना का जितना अधिक चित्रण हुआ उतना किसी अन्य भाव का नहीं हुआ है। किशनगढ़ के निहालचंद जैसे कलाकारों ने गीत–गोविन्द, बिहारी–सतसई, नागरसमुच्चय आदि ग्रन्थों को आधार मानकर राधा–कृष्ण के प्रेम युगल के स्वरूप का चित्रों में अंकन कर सामन्ती प्रभाव को महत्व प्रदान किया है। भावों का उद्दीपन करने हेतु पृष्ठभूमि के अंकन का कार्य कलाकरों ने बखूबी किया है। लाल रंग की तैरती नौकायें, राधा–कृष्ण की प्रेम भावना को उदीप्त करने में सहायक रही हैं। नायक–नायिका के रति भाव को प्रस्तुत करने हेतु उनके लावण्य की भावानुकूल चेष्टा तथा उचित वस्त्राभूषण का सुन्दर अंकन किया है। बणी–ठणी और सावंतसिंह के चित्रण में कलाकार ने लावण्य से परिपूर्ण नवयौवन के भावों की अभिव्यक्ति की हैं जो विभिन्न भावों को दर्शाता हैं। चित्रों में भाव चित्रण व रस चित्रण को कहीं–कहीं पर एक ही नाम से संबोधित किया गया है। राजदरबारों के संरक्षण में विकसित होने वाली किशनगढ़ की चित्रकला में जहाँ एक तरफ राजसी वैभव तथा एश्वर्य की अभिव्यक्ति की गयी वही दूसरी तरफ वल्लभ सम्प्रदाय के प्रेम सम्बन्धी माधुर्य भावना ने चित्रकारों को धार्मिकता से पृथक नहीं होने दिया है।

मध्यकालीन कलाओं में सभी चित्र भावना से ओतप्रोत होते हुए भी बहिर्मुखी रही है। चित्रकारों ने नायक–नायिका के हाव–भाव, अंग–प्रत्यंग की मुद्रायें तथा वस्त्राभूषण द्वारा भावों के अंकन को अधिक महत्व दिया। अंतरूपीड़ा या मनोविकार की अभिव्यक्ति को विशेष स्थान नहीं मिला। जबकि आंतरिक मनोभाव की अभिव्यक्ति वर्तमान में आधुनिक चित्रकला में देखने को मिलती है। वर्तमान समय में चित्रित चित्रकला में बाहरी तत्वों तथा शरीर के सौंदर्य की अपेक्षा मनोव्यथा के सांकेतिक स्वरूप को अंकित करने पर महत्व देती है किन्तु फिर भी भारतीय चित्रकला में प्रमुख विशेषता विभिन्न भावों तथा श्रृंगारिकता का अंकन ही रहा है। अलौकिक तथा लौकिक दोनों विषयों पर भावमय व रसमय चित्रण भारतीय कला जगत में प्रमुखता से हुआ है।

सन्दर्भ :–

1. शरण, डॉ. वासुदेव अग्रवालः कला संस्कृति, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2015, पृ. 40
2. प्रताप, डॉ. रीता : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2015, पृ. 15
3. नीरज, डॉ. जयसिंह : राजस्थानी चित्रकला और हिन्दी कृष्ण काव्य, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2015, पृ. 203
4. पारिक, डॉ. अविनाश : किशनगढ़ का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2014, पृ. 164
5. शुक्ला, डॉ. अन्नपूर्णा : किशनगढ़ चित्र शैली, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2015, पृ. 23
6. पारिक, डॉ. अविनाश : किशनगढ़ का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2014, पृ. 171
7. प्रताप, डॉ. रीता : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2015, पृ. 207
8. चतुर्वेदी, डॉ. ममता : सौन्दर्यशास्त्र , राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2015, पृ. 258
9. डॉ. नमेन्द्र, : रस सिद्धान्त, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2015, पृ. 46
10. चतुर्वेदी, डॉ. ममता : सौन्दर्यशास्त्र, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2015, पृ. 257
11. पाण्डेय, डॉ. पुष्पलता : रीतिकालीन श्रंगारिक सतसइयों का तुलनात्मक अध्ययन, नई दिल्ली, 2015, पृ. 40
12. चतुर्वेदी, डॉ. ममता : सौन्दर्यशास्त्र, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2015, पृ. 259–260
13. गोयल, डॉ. अभिलाषा : किशनगढ़ चित्रकला एक विवेचनात्मक अध्ययन, नवजीवन पब्लिकेशन, टोंक, 2006, पृ. 162
14. चौहान, डॉ. सुरेन्द्र सिंह : राजस्थानी चित्रकला, राहुल पब्लिकेशन, 1994, पृ. 185
15. नीरज, डॉ. जयसिंह, : राजस्थानी चित्रकला और हिन्दी कृष्ण काव्य, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2015, पृ. 179
16. खान, डॉ. वाजबा : किशनगढ़ चित्रकला में भावाभिव्यंजना के मूलाधार, अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, इलाहबाद विश्वविधालय, इलाहाबाद, 1999, पृ. 62
17. शुक्ला, डॉ. अन्नपूर्णा : किशनगढ़ चित्र शैली, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2015, पृ. 49